

IPCC रपिर्त एवं जलवायु परिवर्तन शमन में समानता

प्रलिस के लयि:

[जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र अंतर सरकारी पैनल](#), एकीकृत मूल्यांकन मॉडल (IAM), [कारबन कैपचर और स्टोरेज](#), [जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फरेमवरक कनवेंशन](#)

मेन्स के लयि:

IPCC रपिर्त एवं जलवायु परिवर्तन शमन में समानता, पर्यावरण प्रदूषण तथा गरिवट

[स्रोत: द हट्टि](#)

चर्चा में क्यों?

हाल ही में एक अध्ययन में जलवायु परिवर्तन पर [संयुक्त राष्ट्र अंतर सरकारी पैनल](#) द्वारा मूल्यांकन कयि गए 500 से अधिक भवषिय के उत्सर्जन परदृश्यों पर प्रकाश डाला गया। ये परदृश्य दुनिया के जलवायु प्रक्षेपवकर हेतु अनुमान प्रस्तुत करते हैं।

- अध्ययन के नषिकर्ष IPCC रपिर्त के जलवायु कार्रवाई के अनुमानति मार्गों के अंतगत महत्त्वपूर्ण असमानताओं पर प्रकाश डालते हैं।

IPCC मूल्यांकन रपिर्त क्या हैं?

परचिय:

- IPCC नयिमति रूप से व्यापक मूल्यांकन रपिर्त जारी करती है जो जलवायु परिवर्तन पर वैज्ञानिक साहित्य का संश्लेषण करती है।
- इन रपिर्तों में भौतिक विज्ञान, जलवायु अनुकूलन एवं शमन कार्यों पर ध्यान केंद्रति करने वाले तीन कार्य समूह मूल्यांकन शामिल हैं, साथ ही उनके नषिकर्षों को समेकति करने वाली एक संश्लेषण रपिर्त भी शामिल है।

भवषिय के परदृश्यों का आकलन:

- IPCC यह अनुमान लगाने के लयि 'मॉडल कयि गए मार्गों' का उपयोग करता है कपृथ्वी की सतह के तापमान को सीमति करने के लयि क्या करना होगा।
 - ये मार्ग इंटीग्रेटेड असेसमेंट मॉडल (IAM) का उपयोग करके तैयार कयि गए हैं जो मानव एवं पृथ्वी प्रणालियों का वर्णन करते हैं।
 - IAM जटलि मॉडल हैं जो ऊर्जा एवं जलवायु प्रणालियों के साथ अर्थव्यवस्थाओं के संभावति भवषिय की जाँच भी करते हैं।
- इसके व्यापक आर्थिक मॉडल [सकल घरेलू उत्पाद](#) के अनुमानति विकास स्तर का संकेत दे सकते हैं; इसके ऊर्जा मॉडल भवषिय की खपत का अनुमान लगा सकते हैं। इसके ऊर्जा मॉडल भवषिय की मांग का पूर्वानुमान लगा सकते हैं, वनस्पति मॉडल भूमि-उपयोग परिवर्तनों की जाँच कर सकते हैं और पृथ्वी-प्रणाली मॉडल यह समझाने के लयि भौतिक नयिम लागू करते हैं कि जलवायु कैसे विकसति होती है।
- वभिन्न वषियों में इस तरह के एकीकरण के साथ, IAMS का उद्देश्य जलवायु कार्रवाई पस्नीत-प्रासंगिक दशिश-नरिदेश प्रदान करना है।
- हालाँकि इन मॉडलों में कमरिओं भी हैं। वे कम-से-कम लागत वाले आकलन को प्राथमकिता देते हैं।
 - उदाहरण के लयि, भारत में सौर संयंत्र स्थापति करने या वनीकरण करने की पूर्ण लागत अमेरिका की तुलना में कम है।
 - हालाँकि विशिषज्ञों ने देशों को जलवायु कार्रवाई के बोझ को समान रूप से साझा करने में सक्षम बनाने के परदृश्य को सुवधाजनक बनाने का सुझाव दया है, जसिमें विकसति देश त्वरति और व्यापक शमन उपाय कर रहे हैं।

नए अध्ययन के नषिकर्ष क्या हैं?

- [छठी आकलन रपिर्त](#) के तहत जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (Intergovernmental Panel on Climate Change- IPCC) के शोधकर्त्ताओं ने 556 परदृश्यों का वशि्लेषण कयि। जसिमें अनुमान लगाया गया है, कविर्ष 2050 तक, उप-सहारा अफ्रीका और दक्षिण, पश्चिमि

तथा पूर्वी एशिया (चीन को छोड़कर) सहित विश्व की 60% आबादी वाले क्षेत्रों में अभी भी वैश्विक औसत प्रतिव्यक्ति जीडीपी से कम रहेगा।

○ वैश्विक उत्तर और दक्षिण के बीच वस्तुओं, ऊर्जा तथा जीवाश्म ईंधन की खपत में समान असमानताएँ वदियमान हैं।

■ इसके अलावा, इन परदृश्यों से संकेत मिलता है, कि विकासशील देशों को कार्बन पृथक्करण और कार्बन कैप्चर और स्टोरेज प्रौद्योगिकियों के मामले में अधिक लागत वहन करना होगी।

○ यह गलत तरीके से गरीब देशों पर शमन और कार्बन डाइऑक्साइड हटाने की ज़िम्मेदारी डालता है।

■ शोधकर्ता धनी देशों की ऐतिहासिक ज़िम्मेदारी की अनदेखी करने और विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये ग्लोबल साउथ की ऊर्जा जरूरतों को संबोधित करने में वफिल रहने हेतु परदृश्यों की आलोचना करते हैं।

○ यह जलवायु कार्रवाई के अनुमानित मार्गों के भीतर महत्वपूर्ण असमानताओं को उजागर करता है।

जलवायु परिवर्तन से निपटने में समानता क्यों मायने रखती है?

■ ऐतिहासिक ज़िम्मेदारी:

○ धनी देशों, विशेष रूप से वैश्विक उत्तर में, ने ऐतिहासिक रूप से औद्योगिकरण और आर्थिक विकास के माध्यम से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में सबसे अधिक योगदान दिया है।

○ इन ऐतिहासिक उत्सर्जनों ने जलवायु परिवर्तन में असंगत रूप से योगदान दिया है।

○ जलवायु परिवर्तन से निष्पक्षता से निपटने के लिये इस ऐतिहासिक ज़िम्मेदारी को पहचानना आवश्यक है।

■ विकासशील देशों की असुरक्षा:

○ विकासशील देश, जो अक्सर ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के लिये सबसे कम ज़िम्मेदार होते हैं, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील हैं। उनके पास अक्सर जलवायु परिवर्तन से संबंधित चुनौतियों जैसे चरम मौसम की घटनाओं, समुद्र के स्तर में वृद्धि और बदलती कृषि स्थितियों के अनुकूल संसाधनों तथा बुनियादी ढाँचे की कमी होती है।

○ यह सुनिश्चित करने में समानता के विचार महत्वपूर्ण हैं कि कमज़ोर समुदायों को जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के अनुकूल होने के लिये आवश्यक समर्थन और संसाधन प्राप्त हों।

■ संसाधनों तक पहुँच:

○ वकिसति और विकासशील देशों के बीच शमन और अनुकूलन प्रयासों के लिये संसाधनों तक पहुँच असमान है।

○ अमीर देशों के पास आमतौर पर नवीकरणीय ऊर्जा, जलवायु-लचीला बुनियादी ढाँचे और अनुकूलन उपायों में निवेश करने के लिये अधिक वित्तीय संसाधन, तकनीकी क्षमताएँ तथा बुनियादी ढाँचा होता है।

○ निष्पक्षता विकासशील देशों को जलवायु परिवर्तन का प्रभावी ढंग से समाधान करने के लिये जलवायु वित्तपोषण, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और क्षमता निर्माण सहायता तक एकसमान पहुँच सुनिश्चित करती है।

■ सामाजिक न्याय:

○ जलवायु परिवर्तन देशों के बीच मौजूदा सामाजिक असमानताओं और अन्याय को व्यापक बनाता है। हाशिए पर जीवन यापन करने वाले समूह, मूल निवासी और कम आय अर्जति करने वाली आबादी सहित सुभेद्य समुदाय को अमूमन जलवायु प्रभावों का खामियाज़ा भुगतना पड़ता है।

○ जलवायु कार्रवाई में समानता में इन सामाजिक अन्यायों का समाधान करना और जलवायु नीतियों तथा उपायों से समाज के सभी वर्गों, विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन से सबसे अधिक प्रभावित लोग का लाभ सुनिश्चित करना शामिल है।

■ वैश्विक सहयोग:

○ जलवायु परिवर्तन से निपटने में सारथक प्रगत हासिल करने के लिये वैश्विक सहयोग और एकजुटता की आवश्यकता है।

○ समानता के सिद्धांत, जैसे कि एकसमान कति वभिदति उत्तरदायित्व, जलवायु परिवर्तन का समाधान करने में देशों की अलग-अलग क्षमताओं और उत्तरदायित्व को स्वीकार कर सहयोग को बढ़ावा देते हैं।

○ जलवायु कार्रवाई में समानता सुनिश्चित करने से विश्वास जनित होता है और साझा जलवायु लक्ष्यों की दृष्टि में कार्य करने के लिये राष्ट्रों के बीच सहयोग को बढ़ावा मिलता है।

जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (IPCC):

■ परिचय:

○ जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (IPCC) जलवायु परिवर्तन से संबंधित विज्ञान के आकलन के लिये अंतरराष्ट्रीय संस्था है।

○ इसकी स्थापना वर्ष 1988 में विश्व मौसम विज्ञान संगठन और संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा की गई थी जिसका उद्देश्य नीति निर्माताओं को जलवायु परिवर्तन के वैज्ञानिक आधार, इसके प्रभावों व भविष्य के जोखिमों तथा अनुकूलन एवं शमन के विकल्पों का नियमित आकलन प्रदान करना था।

○ IPCC के आकलन सभी स्तरों पर सरकारों को जलवायु-संबंधी नीतियाँ वकिसति करने के लिये एक वैज्ञानिक आधार प्रदान करते हैं जिनको आधार बनाकर संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन- जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क अभिसमय में वार्ता की जाती है।

■ IPCC आकलन रिपोर्ट:

○ वर्ष 1988 के बाद से, IPCC ने छह मूल्यांकन चक्र चलाए हैं और छह आकलन रिपोर्टें दी हैं, जो विश्व भर में जलवायु परिवर्तन के बारे में सबसे व्यापक वैज्ञानिक रिपोर्ट हैं। वे हैं -

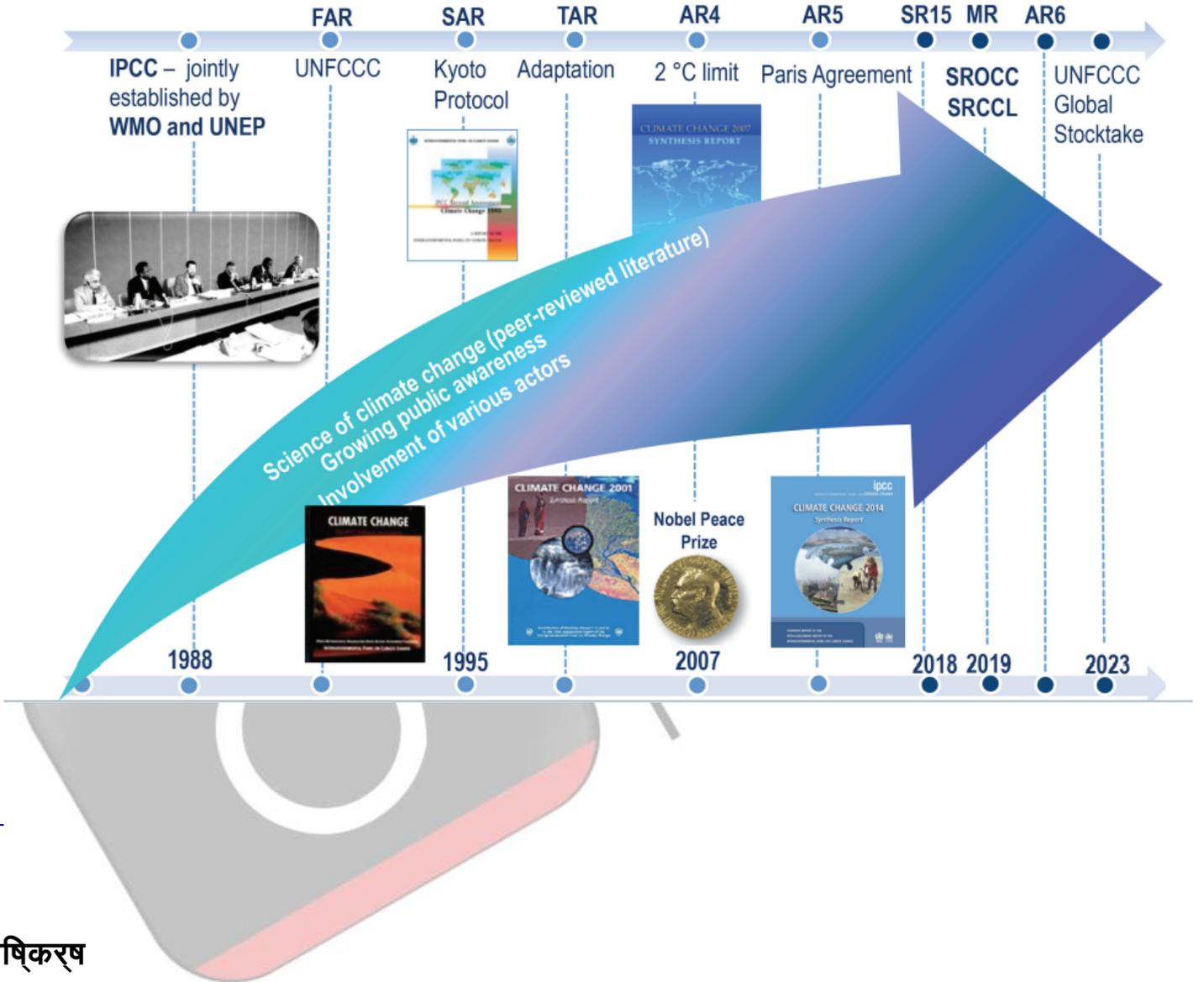
• पहली आकलन रिपोर्ट (FAR) (1990)

• दूसरी आकलन रिपोर्ट (SAR) (1995)

• तीसरी आकलन रिपोर्ट (TAR) (2001)

- चौथी आकलन रिपोर्ट (AR4) (2007)
- पाँचवीं आकलन रिपोर्ट (AR5) (2014)
- छठी आकलन रिपोर्ट (AR6) (2023)
- IPCC वर्तमान (2024) में अपने सातवें आकलन चक्र (AR7) में है।

IPCC contribution to climate science and policymaking



नष्पिकरष

- IPCC परदृश्यों और UNFCCC में उललखिति सदिधांतों का वशिलेषण वकिसति तथा वकिसशील देशों के बीच जलवायु कार्रवाई ज़मिमेदारियों में महत्त्वपूर्ण असमानताओं को उजागर करता है।
- समानता और वभिदति ज़मिमेदारियों के सदिधांतों के बावजूद, वर्तमान शमन मार्ग प्रायः राष्ट्रों की ऐतहासिकि तथा आर्थिकि वास्तवकताओं को नज़रअंदाज़ कर देते हैं।
- इसके साथ ही समानता और नष्पिकषता को प्राथमकता देने के लयि **जलवायु कार्रवाई रणनीतियों को फरि से व्यवस्थति करना अनविर्य** है। इसमें वकिसति देशों के महत्त्वपूर्ण दायतिव को स्वीकार करना तथा शमन प्रयासों के संबंघ में अल्प वकिसति कषेत्रों पर न्यायसंगत दायतिव सुनश्चिति करना शामिल है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. वर्ष 2015 में पेरिस में UNFCCC बैठक में हुए समझौते के संदर्भ में नमिनलखिति कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं? (2016)

1. इस समझौते पर UN के सभी सदस्य देशों ने हस्ताक्षर किये गए और यह वर्ष 2017 में लागू होगा ।
2. यह समझौता ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को सीमित करने का लक्ष्य रखता है जिससे इस सदी के अंत तक औसत वैश्विक तापमान वृद्धि उद्योग-पूर्व स्तरों से 2°C या कोससि करें कि 1.5°C से अधिक न हो पाए ।
3. विकसित देशों ने वैश्विक तापन में अपनी ऐतिहासिक ज़िम्मेदारी को स्वीकारा और जलवायु परिवर्तन का सामना करने के लिये विकासशील देशों की सहायता के लिये वर्ष 2020 से प्रतिवर्ष 1000 अरब डॉलर की प्रतिबद्धता जताई है ।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

- (a) केवल 1 और 3
- (b) केवल 2
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: b

??????????:

प्रश्न. संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क सम्मलेन (यू.एन.एफ.सी.सी.सी.) के सी.ओ.पी. के 26वें सत्र के प्रमुख परिणामों का वर्णन कीजिये । इस सम्मलेन में भारत द्वारा की गई वचनबद्धताएँ क्या हैं? (2021)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/ipcc-reports-and-equity-in-climate-change-mitigation>

